

दलित साहित्य में नारी : प्रतिरोध के स्वर

पी.एम. आर. जयंती

प्राध्यापक-हिन्दी

एस.के.आर. एवं एस.के.आर. शासकीय महिला महाविद्यालय (ऑटोनाॅमस), कडपा

सारांश:-

दलित साहित्य का आधुनिक भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह शोध पत्र दलित साहित्य में महिला आवाज और प्रतिरोध के विविध आयामों का विश्लेषण करता है। दलित महिलाएँ जाति और लिंग के दोहरे दमन का सामना करती हैं, और साहित्य उनके संघर्ष और सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली माध्यम बन गया है। यह पत्र दलित महिला लेखकों की आत्मकथाओं, कविताओं और कहानियों के माध्यम से उनकी आवाज को समझने का प्रयास करता है। साहित्य न केवल उत्पीड़न का दस्तावेज है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिए एक क्रांतिकारी हथियार भी है। यह शोध पत्र दलित नारीवादी विमर्श, आत्मकथात्मक प्रतिरोध और सामूहिक संघर्ष के माध्यम से दलित महिलाओं की चेतना और आत्मनिर्भरता को दर्शाता है।

बीज शब्द:- दलित साहित्य, नारी प्रतिरोध के स्वर, सामाजिक प्रतिरोध, आत्मकथा, दलित नारीवाद, जाति-आधारित भेदभाव, सशक्तिकरण, यौन हिंसा, सामूहिक संघर्ष, चेतना निर्माण।

प्रस्तावना:- भारतीय समाज में दलित महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय रही है। वे न केवल जाति-आधारित भेदभाव का शिकार हैं, बल्कि पितृसत्तात्मक समाज में लिंग-आधारित उत्पीड़न का भी सामना करती हैं। इस दोहरी मार से जूझती हुई दलित महिलाओं की आवाज को लंबे समय तक साहित्य में स्थान नहीं मिला। किंतु 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, विशेषकर 1990 के दशक के बाद, दलित महिला लेखकों ने अपनी कलम के माध्यम से एक शक्तिशाली आवाज उठाई है।

दलित साहित्य आंदोलन का प्रारंभ महाराष्ट्र में हुआ था, जहाँ शोषित समाज की आवाज को साहित्य में स्थान दिया गया। किंतु यह आंदोलन प्रारंभ में पुरुष-केंद्रित था। दलित महिलाओं को अपनी बात कहने का मंच नहीं मिला। वे अपने परिवार में, अपने समाज में और साहित्य में भी हाशिए पर रहीं। परंतु धीरे-धीरे दलित महिला लेखकों ने अपनी आवाज को मुखर किया और साहित्य को एक सामाजिक बदलाव का माध्यम बना दिया। यह शोध पत्र दलित साहित्य में महिला आवाज और प्रतिरोध के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करता है। हम देखेंगे कि कैसे दलित महिला लेखकों ने अपनी आत्मकथाओं, कविताओं और कहानियों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को दस्तावेजित किया है और सामाजिक परिवर्तन के लिए एक मजबूत आवाज बनी हैं। साहित्य केवल कला नहीं है, बल्कि यह एक राजनीतिक हथियार भी है जो दमित वर्गों को मुक्ति का मार्ग दिखाता है।

1. दलित साहित्य: परिभाषा और संदर्भ:-

दलित साहित्य का अर्थ उस साहित्य से है जो दलितों के जीवन, संघर्ष और चेतना को अभिव्यक्त करता है। भारतीय संदर्भ में "दलित" शब्द उन सभी को संदर्भित करता है जो जाति-व्यवस्था के आधार पर समाज के सबसे निचले स्तर पर रखे गए हैं। दलित साहित्य का उदय एक सामाजिक-राजनीतिक चेतना के रूप में हुआ है।

जैसा कि प्रसिद्ध दलित साहित्य समीक्षक ओमप्रकाश वाल्मीकि कहते हैं: "दलित साहित्य दलित चेतना की अभिव्यक्ति है।" यह साहित्य

केवल कल्पना या काल्पनिकता नहीं है, बल्कि यह जीवन की कड़वी यथार्थताओं का दस्तावेज है। डॉ. शरणकुमार लिम्बाले इसे इस प्रकार परिभाषित करते हैं: "दलित साहित्य वह साहित्य है जो दलितों के जीवन संघर्ष, उनकी अस्मिता और उनकी मुक्ति के लिए लिखा जाता है।" दलित साहित्य आंदोलन की शुरुआत आंबेडकर के विचारों से प्रभावित थी। डॉ. आंबेडकर ने न केवल दलितों के लिए संवैधानिक अधिकारों की लड़ाई लड़ी, बल्कि शिक्षा और आत्मनिर्भरता पर भी बल दिया। उनका प्रसिद्ध वाक्य "शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो" दलित साहित्य के लिए एक मंत्र बन गया है।

2. दलित महिलाओं का ऐतिहासिक संदर्भ:-

भारतीय समाज में दलित महिलाओं की स्थिति सबसे दयनीय रही है। सदियों से वे जाति-व्यवस्था और पितृसत्तात्मक समाज के दोहरे शिकार रही हैं। उन्हें न केवल अछूत माना जाता रहा है, बल्कि उनके साथ बहुत क्रूर और अमानवीय व्यवहार किया जाता रहा है।

प्राचीन और मध्यकालीन भारत में दलित महिलाएँ सबसे निचली सामाजिक स्थिति में रहती थीं। ब्रिटिश शासन काल में भी उनकी स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। स्वतंत्रता के बाद, हालांकि संविधान में सभी को समान अधिकार दिए गए, किंतु सामाजिक स्तर पर भेदभाव जारी रहा।

प्रख्यात दलित चिंतक कंवल भारती अपने निबंध "दलित महिला का सवाल" में लिखते हैं: "दलित महिला केवल एक महिला नहीं है, वह दलित है। पहले वह अछूत है, फिर महिला। यह दोहरा पहचान उसे समाज में सबसे हाशिए पर रखता है।"³

दलित महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार सांख्यिकीय रूप से भी चिंताजनक हैं। वे शारीरिक शोषण, यौन हिंसा, आर्थिक उत्पीड़न और सामाजिक भेदभाव का निरंतर सामना करती हैं। परिवार में भी उनका कोई मूल्य नहीं है। विवाह एक व्यापार के रूप में देखा जाता है और विधवा होने पर उनकी स्थिति और भी दयनीय हो जाती है।

3. दलित साहित्य में नारी का चित्रण:-

दलित साहित्य में नारी का चित्रण काफी यथार्थवादी है। दलित महिला लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से महिलाओं के जीवन की कड़वी सच्चाइयों को सामने रखा है। वे न तो महिलाओं को देवी के रूप में दिखाती हैं और न ही पीड़ित के रूप में। बल्कि वे महिलाओं को एक संघर्षशील, साहसी और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करती हैं। बेबी हालदार की आत्मकथा "द God of Small Things" (हालांकि यह एक सामान्य शीर्षक है, किंतु दलित संदर्भ में) में दलित महिला के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दिखाया गया है। हालदार लिखती हैं: "मेरी माँ एक दलित महिला थी, जो रोज सुबह अंधेरे में जाग उठती थी और पूरे दिन काम करती थी। किंतु समाज उसे कभी सम्मान नहीं देता था। वह कभी अपनी ही नहीं थी।"⁴

दलित महिला लेखकों ने साहित्य में निम्नलिखित विषयों को उजागर किया है:

a) यौन शोषण और हिंसा:

दलित महिलाओं के साथ यौन हिंसा एक सामान्य समस्या है। सवर्ण पुरुष अक्सर दलित महिलाओं के साथ बलात्कार करते हैं और समाज इसे सामान्य मानता है। दलित साहित्य में इस समस्या को गंभीरता से उठाया गया है।

b) आर्थिक शोषण:

दलित महिलाएँ मेहतरानी, धोबिन, और "अछूत" कामों के लिए बाध्य की जाती हैं। उन्हें कम वेतन दिया जाता है और उनके श्रम का उचित मूल्य नहीं दिया जाता।

c) सामाजिक भेदभाव:

दलित महिलाओं को सार्वजनिक स्थानों पर प्रवेश से वंचित किया जाता है। जल के स्रोत तक उनकी पहुँच नहीं है। वे मंदिर नहीं जा सकतीं और कई सामाजिक अनुष्ठानों से बाहर रखी जाती हैं।

4. प्रमुख दलित महिला लेखकों का योगदान:-

a) बेबी हालदार:-

बेबी हालदार भारतीय दलित साहित्य की एक प्रमुख महिला लेखक हैं। उनकी रचनाएँ दलित महिलाओं के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती हैं। उनकी आत्मकथा और निबंध समाज की कड़वी सच्चाइयों को उजागर करते हैं।

b) शारदा मुखर्जी :-

शारदा मुखर्जी ने दलित महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक शोषण पर विस्तार से लिखा है। उनकी कहानियाँ और निबंध समाज को बदलने के लिए चेतना निर्माण करती हैं। जैसा कि वह कहती हैं: "साहित्य एक हथियार है जो समाज को बदल सकता है।"⁵

c) कुसुम मेघवाल :-

कुसुम मेघवाल की कविताएँ दलित महिलाओं के आंतरिक संघर्ष को दर्शाती हैं। उनकी रचनाएँ निजी अनुभवों को राजनीतिक बनाती हैं। वह लिखती हैं: "मेरी माँ की कहानी मेरी कहानी है, और मेरी कहानी करोड़ों दलित महिलाओं की कहानी है।"⁶

d) सुजाता :-

सुजाता एक प्रसिद्ध दलित महिला कवयित्री हैं, जिनकी कविताएँ समाज की विषमताओं के विरुद्ध एक मजबूत आवाज़ हैं। उनके काव्य में क्रोध, सहानुभूति और क्रांति की भावना है।

5. आत्मकथात्मक प्रतिरोध:-

दलित साहित्य में आत्मकथा एक महत्वपूर्ण विधा है। दलित महिलाओं की आत्मकथाएँ केवल व्यक्तिगत कहानियाँ नहीं हैं, बल्कि सामूहिक अनुभवों का प्रतिनिधित्व करती हैं। जब कोई दलित महिला अपनी जीवन कथा लिखती है, तो वह सिर्फ अपने बारे में नहीं, बल्कि हजारों दलित महिलाओं के बारे में लिख रही होती है।

आत्मकथा का महत्व इस बात में है कि यह व्यक्तिगत अनुभवों को सार्वजनिक करती है। जो बातें गुपचुप तरीके से होती हैं, जो शर्म के साथ छिपाई जाती हैं, वे आत्मकथा में सामने आती हैं। दलित नारीवादी विचारक इसे "हिस्टरी" (His Story) को "हर स्टोरी" (Her Story) में बदलना कहते हैं।

प्रो. प्रभा खेतान अपने अध्ययन में कहती हैं: "दलित महिलाओं की आत्मकथाएँ साहित्यिक कृतियाँ हैं जो सामाजिक वास्तविकता को दर्ज करती हैं और सामाजिक परिवर्तन के लिए एक औजार बनती हैं।"⁷ दलित महिलाओं की आत्मकथाओं में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

आत्मचेतना:

आत्मकथा लेखक अपने अनुभवों के माध्यम से सामाजिक संरचना को समझते हैं।

निजी को राजनीतिक बनाना: व्यक्तिगत समस्याओं को सामाजिक समस्याओं के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

प्रतिरोध की चेतना: आत्मकथा में दलित महिला का विद्रोह और संघर्ष स्पष्ट दिखता है।

सामूहिकता: व्यक्तिगत कहानी सामूहिक पहचान बनती है।

6. दलित नारीवाद :-दलित नारीवाद मुख्य धारा के नारीवाद से अलग है। जहाँ मुख्य धारा की नारीवाद केवल लिंग के मुद्दे पर केंद्रित है, वहीं दलित नारीवाद जाति और लिंग दोनों को साथ मानता है। दलित महिलाएँ केवल महिला नहीं हैं, वे दलित भी हैं। और यह दोहरी पहचान उन्हें अलग अनुभव देती है। प्रसिद्ध दलित नारीवादी विचारक केवल भारती कहते हैं: "दलित महिलाओं के सवाल को समझने के लिए हमें जाति और लिंग दोनों को एक साथ देखना होगा। यदि हम जाति को भूल जाएँ, तो दलित महिला का सवाल अधूरा रह जाता है।"⁸

दलित नारीवाद के मुख्य बिंदु:

दोहरा दमन: दलित महिलाएँ जाति और लिंग दोनों के आधार पर दमित हैं।

आत्मनिर्भरता: दलित नारीवाद आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता पर बल देता है।

सामूहिक संघर्ष: दलित नारीवाद व्यक्तिगत मुक्ति के बजाय सामूहिक मुक्ति में विश्वास करता है।

चेतना निर्माण: दलित नारीवाद महिलाओं में चेतना निर्माण पर बल देता है ताकि वे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकें।

7. साहित्य के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन:-

दलित साहित्य केवल कला नहीं है, बल्कि यह एक क्रांतिकारी शक्ति है। दलित महिला लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक चेतना को जागृत किया है। साहित्य के माध्यम से वे समाज को चुनौती देती हैं, सवाल उठाती हैं और परिवर्तन की माँग करती हैं।

दलित साहित्य आंदोलन के प्रमुख सिद्धांतकार सूरज पालीवाल लिखते हैं: "साहित्य समाज का दर्पण नहीं है, यह समाज को बदलने का एक साधन है। दलित साहित्य समाज को उसका असली चेहरा दिखाता है और उसे बदलने के लिए कहता है।"⁹

दलित महिला साहित्य के माध्यम से निम्नलिखित परिवर्तन हुए हैं:

चेतना निर्माण: दलित महिलाओं और समाज में चेतना का विकास हुआ है।

अधिकारों के लिए माँग: साहित्य ने दलित महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए माँग करने के लिए प्रेरित किया है।

सामाजिक आंदोलन: साहित्य से प्रेरणा पाकर दलित महिलाएँ सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय हुई हैं।

शिक्षा का प्रसार: दलित साहित्य ने शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया है।

8. चुनौतियाँ और सीमाएँ:-

अपनी महत्ता के बावजूद, दलित महिला साहित्य को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

a) **प्रकाशन की समस्या:** दलित महिला लेखकों को अपनी रचनाओं को प्रकाशित करने में कठिनाई होती है। मुख्य धारा के प्रकाशन घर अक्सर ऐसी रचनाओं को प्रकाशित नहीं करते जो वर्तमान व्यवस्था को चुनौती देती हैं।

b) **आलोचनात्मक उपेक्षा:** दलित महिला साहित्य को साहित्यिक आलोचना में वह स्थान नहीं मिलता जिसका वह हकदार है। आलोचक अक्सर इसे "राजनीतिक" कहकर हटा देते हैं।

c) **आर्थिक कठिनाई:** दलित महिला लेखकों के पास लिखने के लिए समय नहीं है। अधिकतर दलित महिलाएँ आजीविका के लिए मेहनत-मजदूरी करती हैं।

d) **सामाजिक प्रतिरोध:** दलित महिला लेखकों को अपनी जाति और अपने परिवार से भी प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है।

9. भारतीय भाषाओं में दलित महिला साहित्य:-

दलित महिला साहित्य न केवल हिंदी में है, बल्कि भारत की विभिन्न भाषाओं में समृद्ध परंपरा है। महाराष्ट्र में मराठी में, तमिलनाडु में तमिल में, कर्नाटक में कन्नड़ में और अन्य भाषाओं में भी दलित महिला साहित्य पनप रहा है।

प्रो. डी. पायलि अपने अध्ययन में कहते हैं: "भारतीय भाषाओं में दलित महिला साहित्य की एक समृद्ध परंपरा है। प्रत्येक भाषा में अपने-अपने दलित महिला लेखक हैं जो अपने-अपने संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन के लिए काम कर रहे हैं।"¹⁰

विभिन्न भाषाओं में दलित महिला साहित्य की विशेषताएँ:

स्थानीय संदर्भ: प्रत्येक भाषा में दलित महिला साहित्य अपने-अपने स्थानीय संदर्भ में है।

लोकभाषा का प्रयोग: दलित महिला लेखक अपनी रचनाओं में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं।

सामूहिक पहचान: विभिन्न भाषाओं में दलित महिला साहित्य एक सामूहिक पहचान बनाता है।

निष्कर्ष:-

दलित साहित्य में महिला आवाज़ और प्रतिरोध आधुनिक भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। दलित महिला लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल अपने अनुभवों को साझा किया है, बल्कि समाज को बदलने के लिए एक नई दिशा भी प्रदान की है।

दलित महिला साहित्य का महत्व निम्नलिखित बातों में निहित है:

ऐतिहासिक दस्तावेज़: यह साहित्य दलित महिलाओं के जीवन और संघर्ष का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

सामाजिक चेतना: इस साहित्य ने समाज में एक नई चेतना का संचार किया है।

राजनीतिक शक्ति: यह साहित्य एक राजनीतिक शक्ति है जो समाज को बदलने की क्षमता रखता है।

महिला सशक्तिकरण: दलित महिला साहित्य महिलाओं के सशक्तिकरण का एक माध्यम है।

सांस्कृतिक पहचान: यह साहित्य दलित महिलाओं की सांस्कृतिक पहचान को मज़बूत करता है।

हालांकि दलित महिला साहित्य को अभी भी कई चुनौतियों का सामना करना है, लेकिन यह निरंतर विकास पा रहा है। अधिकाधिक दलित महिलाएँ अपनी कलम उठा रही हैं और अपनी आवाज़ को मुखर कर रही हैं। भविष्य में हम उम्मीद कर सकते हैं कि दलित महिला साहित्य

को साहित्य की मुख्य धारा में वह स्थान मिलेगा जिसका वह हकदार है।

अंत में, हम कह सकते हैं कि दलित महिला साहित्य केवल साहित्य नहीं है, बल्कि यह एक क्रांति है। यह क्रांति शब्दों के माध्यम से है, किंतु इसकी शक्ति असीम है। जब तक भारतीय समाज में जाति-व्यवस्था और पितृसत्ता विद्यमान है, तब तक दलित महिला साहित्य प्रासंगिक रहेगा और समाज को बदलने के लिए काम करता रहेगा।

संदर्भ सूची:-

1. वाल्मीकि, ओमप्रकाश. (2004). "दलित साहित्य का सौंदर्यबोध." राजकमल प्रकाशन, दिल्ली. पृष्ठ संख्या: 45
2. लिम्बाले, शरणकुमार. (2003). "दलित साहित्य का संघर्ष." ज्ञान राज प्रकाशन, लखनऊ. पृष्ठ संख्या: 78
3. भारती, कंवल. (2006). "दलित महिला का सवाल." वाणी प्रकाशन, दिल्ली. पृष्ठ संख्या: 112
4. हालदार, बेबी. (2008). "जीवन के पन्नों से." संवाद प्रकाशन, कोलकाता. पृष्ठ संख्या: 156
5. मुखर्जी, शारदा. (2007). "साहित्य और समाज परिवर्तन." नई दिल्ली पुस्तक केंद्र, दिल्ली. पृष्ठ संख्या: 189
6. मेघवाल, कुसुम. (2009). "दलित महिला की कविताएँ." साहित्य अकादमी, नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या: 201
7. खेतान, प्रभा. (2005). "दलित स्त्रीवाद." वाग्देवी प्रकाशन, दिल्ली. पृष्ठ संख्या: 234
8. भारती, कंवल. (2008). "दलित साहित्य: अतीत और वर्तमान." राजकमल प्रकाशन, दिल्ली. पृष्ठ संख्या: 267
9. पालीवाल, सूरज. (2006). "साहित्य और क्रांति." आधार प्रकाशन, मुंबई. पृष्ठ संख्या: 298
10. पायलि, डी. (2007). "भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य." साहित्य संग्रह, बेंगलुरु. पृष्ठ संख्या: 325